उ0प्र0 पंडित दीन दयाल उपाध्याय पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय एवं गो–अनुसंधान संस्थान (दुवासु) मथुरा द्वारा पशुपालकों को कोरोना संक्रमण से बचाव हेतु एडवाईजरी

कोरोना संक्रमण से बचाव हेतु पशुपालक भाईयों एवं बहनों को आवश्यक सुरक्षात्मक सुझाव

1. पशुपालन के कार्य में लगे हुये सभी व्यक्ति कोविद–19 के संक्रमण को फैलने से रोकने हेतु सदैव परस्पर सामाजिक दूरी बनाये रखें साथ ही एक निश्चित समयान्तराल पर हाथों को साबुन से धोयें एवं मास्क अथवा रूमॉल/गमछा/स्वापी से अपना मुॅह ढ़क कर रखें।
2. जुकाम, तेज बुखार के साथ सूखी खांसी एवं सांस लेने में तकलीफ जैसे लक्षण होने पर निकटतम प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में जांच करायें।
3. अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए आयुष मंत्रालय के सुझावों का पालन करें।
4. गौशाला अथवा पशुओं के बाड़े के अन्दर एवं आस–पास के स्थानों की साफ–सफाई पर विशेष ध्यान दें।
5. इधर–उधर थूकना पूर्णतया प्रतिबन्धित करें।
6. बीमारी के संक्रमण को कम करने हेतु आवश्यक जैव सुरक्षा उपायों का पूर्णतया पालन करें।
7. पशुओं के चारा एवं पानी पिलाने की हौद की एक नियमित समयान्तराल पर सफाई एवं चूने से पुताई करायें तथा पशुओं को सदैव स्वच्छ एवं ताजा पानी पिलायें।
8. पशुपालन में प्रयुक्त होने वाले संयंत्रों जैसे ट्रैक्टर–ट्राली, दाने की गाडी की साफ–सफाई एवं सैनिटाईजेशन पर भी विशेष ध्यान दें।
9. प्रवेश द्वार पर मशीनों, दूध एवं अनाज की गाडियों को भी एक निश्चित समयान्तराल पर सैनिटाईज करते रहें।
10. दूध निकालने के कार्य में प्रयुक्त ग्वाले पूर्णतया स्वस्थ होने चाहिये एवं मास्क अथवा रूमॉल/गमछा/स्वापी से अपना मुॅह ढॅक कर रखें। स्वच्छ कपडे पहनें एव नाखून कटे हों।
11. गाय, भैंस, भेड एवं बकरी में खुरपका–मुॅहपका, गलघोंटू एवं लंगडी बुखार का टीकाकरण अवश्य करायें। बीमार एवं अति–गर्भित पशु का टीकाकरण नहीं करायें।
12. आंतरिक एवं वाह्य परजीवियों से बचाव हेतु कृमिनाशक औषधियां पशुचिकित्सक के परामर्श से अपने पशुओं को अवश्य खिलायें।
13. पशुओं को गर्मी एवं लू से बचाव हेतु आवश्यक उपाय करें।
14. पशुओं के राशन में अचानक बदलाव नहीं करें।
15. मादा पशुओं में गर्मी के लक्षण दिन में कम तथा रात्रि में अधिक प्रदर्शित होते हैं। अतः पशुपालक अपने पशुओं का विशेष ध्यान रखें। जिन मादा पशुओं को गर्भित कराये हुये 30–50 दिन हो चुके हों, उनका पशुचिकित्सक के द्वारा गर्भ परीक्षण अवश्य करायें।
16. पशुओं की दूध उत्पादन, प्रजनन क्षमता एवं शारीरिक विकास हेतु उचित मात्रा में संतुलित आहार दें एवं गर्भित पशुओं को अतिरिक्त राशन अवश्य दें।
17. ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखें तथा ब्याने के 1 घंटे के अंदर नवजात बछडे को खीस अथवा कोलस्ट्रम अवश्य पिलायें।
18. पशुओं को प्रतिदिन 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण प्रतिदिन अवश्य दें, जिससे उनकी दूध उत्पादन, प्रजनन क्षमता एवं शारीरिक विकास समुचित रूप से होता रहे।
19. पशु उत्पादों के विपणन एवं निर्माण में विशेष सावधनी रखें।
20. कोरोना संक्रमण के दौरान यदि पशु बीमार होता है तो उसे तत्काल निकटतम् पशुचिकित्सक से उचित परामर्श लें।